नृत्य भास्कर (प्रथम खंड)
Nritya Bhaskar Part-I (Sixth Year)
कत्थक नृत्य (KATHAK DANCE)

पूर्णांक:४०० (शास्त्र प्रथम प्रश्न-पत्र-१००
द्वितीय प्रश्न -पत्र-१००
क्रियात्मक -१२५
मंच प्रदर्शन-७५

शास्त्र (Theory)

प्रथम प्रश्न-पत्र (First Paper)

(१) प्राचीन तथा आधुनिक नृत्यों के प्रकार तथा उनका विस्तृत अध्ययन।

(२) शास्त्रीय नृत्यों के परिभाषिक शब्दों का विस्तृत अध्ययन।

(३) प्राचीन, मध्यकालीन तथा आधुनिक युग के नृत्यों का आलोचनात्मक अध्ययन।

(४) भारतीय नृत्य तथा पाश्चात्य नृत्य शैली का तुलनात्मक अध्ययन तथा भारतीय नृत्यों पर पश्चिमी नृत्यों का प्रभाव।

(५) प्राचीन तथा आधुनिक नृत्य रचनाओं के सिद्धान्त उनकी विशेषतांए तथा रचनाओं के प्रकार।

(६) निम्नलिखित का विस्तृत ज्ञान-

थाट, लक्षण, नृतांग, जाति शून्य, भाव रंग, इष्ट पद, गति भाव, तराना आदि।

(७) भारतीय शास्त्रीय नृत्यों से सम्बन्धित प्राचीन ग्रन्थों का आलोचनात्मक अध्ययन।

(८) कत्थक नटवरी नृत्य पद्धति के क्षेत्र में विभिन्न घरानों की उत्पति विकास तथा विशेषताएं।

(९) विभिन्न नृत्यों के प्रदर्शन में रसों, स्थायी, संचारी, भाव अनुभाव आदि

का विकास।

(१०) पूर्वी तथा दक्षिणी भारत के लोक नृत्यों का ज्ञान तथा उनकी विशेषताएं।

(११) निम्नलिखित का ज्ञान तथा वर्णन-
भूमिचारी, आकाशचारी, भूमि मण्डल, आकाश मण्डल, विष्णुमाल, जीव माल, गुणमाल, युगमाल, तत्व माल, ऋतु माल।

(१२) नीति पथ, नृत्य अंकन विधान, हस्तपद की परिभाषा।

(१३) निम्नलिखित का ज्ञान-
क: भानवी, मानवी, गज-गामिनी, तुरंगनी, हंसिनी, मृगी, खंजरीटि।
ख:भाव पाठ, नैन पाठ, बोल भाव, भाव मुद्रा, अनुकरण मुद्रा, अर्थभाव, नृत्य भाव, गत अर्थ भाव, समभाव।

(१४) कत्थक नृत्य शैली में गत भाव, ठुमरी तथा कवित आदि का स्थान।

(१५) निम्नलिखित की परिभाषा तथा वर्णन-
क: आरोही अंग, अवरोही अंग ,चंचल गति, प्रभाव गति, खण्ड गति भ्रमरी गति, गमन आगमन क्रिया।
ख: चक्र, विपरीत चक्र, अर्द्ध चक्र।

(१६) भारतीय शास्त्रीय तथा लोक नृत्यों से सम्बन्धित निबन्धों को लिखनें की योग्यता।

द्वितीय प्रश्न-पत्र (Second Paper)

(१) प्राचीन, मध्यकालीन तथा आधुनिक युगों में भारतीय नृत्य का प्रगतिशील विकास।

(२) भारतीय तथा पश्चिमी स्वरलिपि पद्धतियों का इतिहास।

(३) असंयुक्त तथा संयुक्त हस्त मुद्राएं तथा उनका उपयोग।

(४) भातखंडे तथा विष्णु दिगम्बर पद्धतियों में स्वर लिपियां लिखनें का अभ्यास।

(५) ठाह, दुगुन, तिगुन चौगुन, आड़ कुआड़ बिआड़ लयकारियों में ताल लिखनें का ज्ञान।

(६) ताल का उदगम तथा नृत्य से ताल तथा लय का सम्बन्ध।

(७) ताल, अताल, सताल शब्दताल, मूकताल आदि की परिभाषा।

(८) शास्त्रीय तथा लोक नृत्यों में प्रयोग होने वाली तालों के चयन का सिद्धान्त।

(९) शास्त्रीय सुगम तथा लोक नृत्यों के सम्बन्ध में लय।

(१०) एकांकी नृत्य, द्वन्द नृत्य समूह नृत्य के सिद्धान्त तथा परिपाटी।

(११) विभिन्न नृत्यों की शैलियां, उनकी तुलना तथा विशेषताओं का इतिहास।

(१२) परन, चक्करदार परन, फरमाइशी परन आदि को ताल लिपिबद्ध करने की क्षमता।

क्रियात्मक (Practical)

(१) हाथ पर ताली देकर विभिन्न लयकारियों के प्रदर्शन का अभ्यास।

(२) पाठ्यक्रम में निर्धारित तालों में किसी वाद्य यन्त्र पर नगमा बजानें की योग्यता।

(३) निम्नलिखित कथाओं पर नृत्य प्रदर्शन की योगयता।
वामन अवतार, सती अनुसूया, कंस वध, अमृत मंथन, विश्वामित्र मेनका शकुन्तला तथा दुष्यन्त ,होली-लीला, राधा तथा कृष्ण, कृष्ण-सुदामा, कृष्ण कुब्जा मिलन, गोपी विरह, मटकी नृत्य, गोवर्धन नृत्य, माखन चोरी नृत्य।

(४) मणीपुरी अथवा भरत नाट्यम शैली में से किसी एक के प्रदर्शन की योग्यता।

(५) उत्तर भारत, मध्य भारत तथा पश्चिमी भारत के कुछ लोक नृत्यों के प्रदर्शन की योग्यता।

(६) निम्नलिखित का क्रियात्मक ज्ञान-
क: आधुनिक भारतीय नृत्य,

ख: रास नृत्य।

(७) लयकारियों के विभिन्न प्रकार तथा आमद, परन चक्रदार परन कवित, छन्द, गत, गत भाव आदि का प्रदर्शन।

(८) तबला तथा तबले के साथ नगमा देने की योग्यता।

(९) तोड़ा, टुकडा, परन, चक्रदार परन आदि पर नृत्य तथा दूसरे व्यक्ति द्वारा बोलों पर नृत्य करने की योग्यता।

(१०) ३/२, २/३, ३/४ , ४/६ ५/४, ४/५ ७/४ ४/७, ताली तथा खाली के साथ लयकारियां प्रदर्शन की योग्यता।

(११) निम्नलिखित तालों के साथ तत्कार, ठाट् , आमद, सलामी, परन, चक्रदार परन, फरमाइशी परन, मिश्र जाति परन, तिस्त्रजाति परन चतुस्त्रजाति परन, कवित आदि पर कौशल के साथ नृत्य प्रदर्शन की योग्यता- त्रिताल, सूलताल, धमार, कुम्भ, वसन्त, फरोदस्त, शिखर, आड़ा चौताल, सवारी, (१६ मात्रा) अष्टमंगल (२२ मात्रा)।

(१२) निम्नलिखित तालों में केवल तत्कार, ठेका, मात्रा, विभाग ताली खाली आदि। चन्द्रकला (१५ मात्रा), जय मंगल (१६ मात्रा), मदन (१२ मात्रा), आड़ा पन्न (१५ मात्रा), चूड़ामणि (१७ मात्रा), रास (१३ मात्रा), अताल (१२ मात्रा), चक्रताल (३० मात्रा)।

(१३) पढन्त का अभ्यास।

मंच प्रदर्शन

परीक्षार्थी को ४५ मिनट तक निर्धारित तालों में तत्कार, पलटा ठाट, आमद, सलामी, टुकडा परन, फरमाइशी परन, तिस्त्र जाति परन, मिश्रजाति परन, प्रमलू परन, कवित आदि का उत्तम प्रदर्शन करना होगा।

नृत्य भास्कर पूर्ण
Nritya Bhaskar Final (Seventh Year)
कत्थक नृत्य (KATHAK DANCE)

पूर्णांक: ४०० शास्त्र प्रथम प्रश्न-पत्र-१००
(द्वितीय प्रश्न-पत्र-१००, क्रियात्मक-१२५
(मंच प्रदर्शन-७५

शास्त्र (Theory)

प्रथम प्रश्न -पत्र (First Paper)

(१) भारतीय शास्त्रीय नृत्यों का आलोचनात्मक अध्ययन, उनकी उत्पति तथा विशेषताएं।

(२) प्राचीन, मध्यकालीन तथा आधुनिक युगों के शास्त्रीय नृत्यों से सम्बन्धित ग्रन्थों का आलोचनात्मक अध्ययन, इन युगों के प्रमुख नर्तकों के जीवन चरित्र।

(३) प्राचीन, मध्यकालीन तथा आधुनिक युगों में मंच की उत्पति तथा विकास का विस्तृत अध्ययन तथा मंच की आवश्यकता।

(४) मंच प्रकाश, उसका उद्गम तथा उसका इतिहास, नृत्य का मंच से परस्पर सम्बन्ध, नृत्य से मंच प्रकाश का सम्बन्ध, प्राचीन, मध्य कालीन, आधुनिक समय में, मंच प्रकाश का समय समय पर विकास।

(५) क: नृत्यों में पोशाक का स्थान तथा महत्व, पोशाक तथा भाव का परस्पर सम्बन्ध।
ख: प्राचीन, मध्यकालीन तथा आधुनिक युगों में वेशभूषा का परिवर्तन।
ग: किन तत्वों से यह परिवर्तन हुए।
घ: प्राचीन, मध्यकालीन तथा आधुनिक युग में रंग भूषा, वेशभूषा का विस्तृत ज्ञान।

(६) नृत्य नाट्य तथा नृत में तुलना-नाटय की उत्पति, मानवीय जीवन से नृत्य, नाट्य तथा नृत का सम्बन्ध।

(७) लास्य तथा ताण्डव की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि तथा आलोचनात्मक अध्ययन,

इनके विभिन्न भाग तथा मानव जीवन पर उनका प्रभाव तथा उनकी पृथक पृथक विशेषतायें।

(८) भारत के लोक नृत्य का विस्तृत तुलनात्मक अध्ययन तथा लोगों के जीवन में उनका महत्व।

(९) गायन तथा वाद्य संगीत का आपसी सम्बन्ध तथा इनका नृत्य से सम्बन्ध।

(१०) क: नृत्य में वाद्य वृन्द का स्थान तथा महत्व।
ख: वाद्यवृन्द की आवश्यकता।

(११) घुघरूओं का उद्गम तथा विकास, नृत्य में घुघरूओं का कार्य व उपयोग।

(१२) क: बैले, ऑपेरा, रासलीला आदि का विस्तृत तथा आलोचनात्मक अध्ययन।
ख: रस तथा भाव में सम्बन्ध, मानवीय जीवन पर इनका प्रभाव।

(१३) क: नृत्य का चित्रकारी, मूर्तिकला तथा अन्य ललित कलाओं से सम्बन्ध।
ख: अजन्ता तथा ऐलोरा गुफाओं में बनी चित्रकारी तथा मूर्तियों का भारतीय शास्त्रीय नृत्यों के प्रसंग में अध्ययन।

(१४) अभिनय की परिभाषा तथा विभिन्न पहलू, अभिनय का नृत्य में स्थान।

(१५) पश्चिमी नृत्यों के नाम उनकी विशेषताएं, उनके निपुर्ण नर्तकों का जीवन चरित्र। पश्चिमी नृत्यों में वाद्य वृन्द का स्थान इनमें ताल, लय का महत्व तथा भावों का प्रकटीकरण।

(१६) क: भरत नाट्यम शैली के विभिन्न पहलुओं का विस्तृत तथा आलोचनात्मक अध्ययन।
ख: भरत नाट्यम में रस तथा भाव का स्थान।
ग: भरत नाट्यम के लिए मंच प्रकाश, वाद्यवृन्द तथा वेशभूषा।

(१७) क: मणिपुरी नृत्य शैली का विस्तृत अध्ययन।
ख: इसकी ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, शैली, रस, भाव, मुद्रा, वेशभूषा, मंच प्रकाश आदि।
ग: वाद्यवृन्द यन्त्र की पृष्ठभूमि।

(१८) मणिपुरी तथा कत्थक नृत्य शैलियों का तुलनात्मक अध्ययन।

(१९) क: कथकली नृत्य शैली का विस्तृत अध्ययन, ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, रस, भाव, मुद्रा, मंच प्रदर्शन, रंगभूषा, वाद्ययंत्र आदि।

ख: कथकली एवं कत्थक नृत्य शैलियों का तुलनात्मक अध्ययन।

(२०) क: आधुनिक नृत्यों का उदगम तथा विकास का अध्ययन तथा उनके विभिन्न पहलू।
ख: आधुनिक नृत्यों में रस तथा भाव का स्थान।
ग: पार्श्व संगीत का अध्ययन, इसकी आवश्यकता तथा आधुनिक नृत्यों में इसका महत्व।

द्वितीय प्रश्न-पत्र (Second Paper)

(१) निम्नलिखित की परिभाषा तथा व्याख्या-
आमद, गत, भाव, अनुभाव, थाट, तोड़ा टुकडा, आवृत्ति, लय, मात्रा, ताल, अदा ,परन, तत्कार, थाट, घुमरिया, सलामी पलटा, कवित्त परन, निकास, तिहाई , सम, ताली, खाली, काल, मार्ग ,क्रिया, अंग यति प्रस्तार, विभाग, ग्रह, कला, जाति, अनचित, अनुमोल, प्रतिलोम, अग्रतल कुटट्न, दृष्टि, उत्पलवन भ्रमरी, अपकंठ, उठान उपांग, एकपाद, किनकिनी, कुंचित, चक, भ्रमरी, चक्रमान, चंचल , चलन-चारी ग्रीवा, मोहित, रंग , सर्प, सर्पयान, उरमई, सुलप, उरप, तिरप, शुद्धमुदा, लाग, चलन, फिरन, शोभा, पिण्डी, कसक, कटाक्ष, गत भाव, तोड़ा, मुखविलास आदि।

(२) भारतीय नृत्य में प्रयोग की जाने वाली मुद्राओं का विस्तृत अध्ययन तथा विभिन्न नृत्यों में उनका प्रयोग, रस भाव से इनका सम्बन्ध।

(३) मण्डल की परिभाषा, इसके विभिन्न पहलू तथा विभिन्न नृत्यों में इसका महत्व। रस तथा भाव से मण्डल का सम्बन्ध।

(४) चारी की परिभाषा, इसके विभिन्न पहलू तथा विभिन्न नृत्यों में इसका महत्व तथा रस भाव से इसका सम्बन्ध।

(५) कत्थक नृत्य शैली के विख्यात कलाकारों का जीवन परिचय योगदान तथा उनकी विशेषतायें।

(६) नायक तथा नायिका के भेद तथा उनमें अन्तर।

(७) रास नृत्य का उद्गम इसका इतिहास, वेषभूषा, रंगभूषा, मंच प्रकाश,

वाद्य वृन्द, रस, भाव तथा कत्थक नृत्य से सम्बन्ध में ज्ञान।

(८) तालिपि की परिभाषा तथा सभी टुकडों, परनों तोडों चक्करदार परनों आदि को तालिपि में लिखनें का ज्ञान।

(९) नई स्वरलिपि पद्वति निर्माण के सुझाव।

(१०) लयकारी की परिभाषा, विभिन्न लयकारियों जैसे ठाह, दुगुन तिगुन, चौगुन, पंचगुन, छःगुन, सतगुन, अठगुन तथा अन्य जैसे ३/२, २/३, ६/४, ४/७, ७/४, ५/२ तथा २/५ का ज्ञान।

(११) सभी निर्धारित तथा पूर्ववर्ती तालों को लयकारियों में लिखने का ज्ञान।

(१२) सभी निर्धारित तथा पूर्ववर्ती तालों को नगमों में लिखनें का ज्ञान।

(१३) टुकडों तोडों, परनों चक्रदार परनों की तालिपि तथा पाठयक्रम में निर्धारित पूर्ववर्ती ठेके।

(१४) ठुमरी नृत्य का ज्ञान।

(१५) कर्नाटकी ताल पद्वति का विस्तृत अध्ययन, इसके विभिन्न पहलू उत्तरी तथा कर्नाटकी पद्वति में तुलना, कर्नाटकी ताल पद्वति लिखनें का ज्ञान।

(१६) निबन्ध-
क: नृत्य, ताल तथा लय में सम्बन्ध।
ख: प्रभावशाली नृत्य के लिये व्यायाम का महत्व।
ग: भावों के अभिव्यक्ति के माध्यम के रूप में नृत्य का प्रभाव।
घ: नृत्य के वैज्ञानिक पहलू।
ड़: नृत्य में लय का स्थान।
च: नृत्य तथा अन्य ललित कलाएं।
छ: शास्त्रीय तथा लोक नृत्य।
ज: नृत्य तथा रस।
झ: भारतीय नृत्यों पर पश्चिम नृत्यों का प्रभाव।
ञ: नृत्यों का वर्गीकरण।
ट: भारतीय शास्त्रीय नृत्यों के विकास तथा प्रचार मे संगीत विद्यालयों का स्थान।
ठ: भारत के क्षेत्रीय लोक नृत्य।

ड: भारतीय शास्त्रीय नृत्य का कलात्मक तथा अध्यात्मिक पहलू।
ढ: नृत्य तथा धर्म।
ण: शिक्षा में नृत्य की भूमिका।
त: जीवन में नृत्य की आवश्यकता।
थ: नृत्य तथा साहित्य।
ध: सभी ललित कलाओं में नृत्य महान।
प: १५वीं तथा १७वीं शताब्दियों में कलाओं का आमतौर पर तथा नृत्य का विशेषतौर पर ह्रास।
फ: भारत में नृत्य का भविष्य तथा आदर्श।
ब: फिल्म तथा मंच।

क्रियात्मक (Practical)

(१) लास्य तथा ताण्डव नृत्य में प्रयुक्त की जाने वाली सभी हस्त मुद्राओं का क्रियात्मक प्रदर्शन।

(२) अभिनय तथा इसके भागों का क्रियात्मक प्रदर्शन।

(३) कथक नृत्य शैली के घरानों का क्रियात्मक वर्णन, उनकी विशेषताएं तथा उनके कलाकारों का योगदान।

(४) अब तक अध्ययन किये गये सभी तालों में कुशलता से नृत्य करने की योग्यता।

(५) निम्नलिखित को सही तरीके से प्रस्तुत करने की योग्यता-
आमद, गत भाव, अनुभाव, थाट, तोडा, टुकडा, परन, ततकार, घुमरियां, सलामी , पल्टा, कवित्त, निकास, तिहाई, प्रमेलू का तोड़ा, बढैया की परन, चक्रदार परन, फरमाईशी चक्रदार परन, आड कुवाड, बिआड, कमाली की परन, नेहक्का परन, शिव परन, कृष्ण परन, दुर्गा परन, विष्णु परन, सरस्वती परन, सिंह विलोकन परन, गणेश परन, काली परन, नटवरी तोडे, संगीत तोडे, बादल परन, बिजली परन आदि।

(६) विभिन्न तालों की विभिन्न लयकारियों में तिहाइयों के विभिन्न प्रकारों का कुशलता से प्रदर्शन।

(७) नायक तथा नायिका के भेदों का क्रियात्मक प्रदर्शन।

(८) निम्नलिखित रागों में ठुमरी नृत्य प्रदर्शन करने की योग्यता-
खमाज पीलू, झिंझोटी, मांड, भैरवी, जोगिया, देश, तिलक कामोद, पहाड़ी, काफी, तिलंग तथा आसा।

(९) रस तथा भाव के साथ मण्डल, चारी, करण, अंगहार का प्रदर्शन करने की क्षमता।

(१०) अंगों, प्रत्यगों तथा विभिन्न उपांगों का क्रियात्मक प्रदर्शन करने की योग्यता।

(११) ठाह, दुगुन, तिगुन चौगुन, पंचगुन, छहगुन सतगुन, अठगुन, आड़ कुआड़ विआढ में सभी तालों के क्रियात्मक प्रदर्शन की योग्यता। तबले के साथ तथा बिना तबले के लयकारियां प्रस्तुत करना- २/३, ३/२, ४/७ , ७/४ ४/५, ५/४, ३/४, ४/३ ५/३ ३/५।

(१२) किसी भी वाद्ययन्त्र पर नगमा वादन की योग्यता।

(१३) पढ़न्त की प्रवीणता।

(१४) विभिन्न रसों तथा भावों को प्रदर्शित करने की योग्यता।

(१५) तत्कार के विभिन्न प्रकारों तथा विभिन्न लयकारियों के साथ विभिन्न तालों में पलटे प्रस्तुत करनें की योग्यता।

(१६) निम्नलिखित में किन्ही आठ कथानकों पर नृत्य प्रस्तुत करने की योग्यता-
ऊषा तथा अनुरूद्ध, दाधिची तप, दानवीर कर्ण, शंकर विवाह, बाली वध निशाद भक्ति, बुद्ध तप, रूकमणी हरण, पार्वती तप, रावण तप, उत्तरा-अभिमन्यु, पुष्प वाटिका में राम सीता मिलन, कुब्जा, मिलन, भीष्म प्रतिज्ञा, अर्जुन तथा ऊर्वशी आदि।

(१७) निम्नलिखित में से किसी एक नृत्य का क्रियात्मक प्रदर्शन करने की योग्यता- कथाकली, मणिपुरी अथवा भरत नाट्यम।

(१८) भारत के विभिन्न क्षेत्रों के लोक नृत्यों के कम से कम ५ प्रकार प्रस्तुत करने की योग्यता।

(१९) निम्नलिखित में से किन्ही दो का क्रियात्मक ज्ञान-
क: आधुनिक नृत्य,
ख: टैगौर शैली,

ग: उदय शंकर शैली,
घ: रास नृत्य।

(२०) पूर्ण विश्वास के साथ विभिन्न तालो में प्रवीणता के साथ नृत्य करने की योग्यता-
चौताल, त्रिताल, एक ताल, झमूरा, दीपचन्दी, गजझम्पा, जत, बसंत।

(२१) तत्कार, ठेका विभाग, मात्रा, ताली, खोली के प्रसंग में निम्नलिखित तालों में नृत्य प्रस्तुत करने की योग्यता-
लक्ष्मी (१८ मात्राएं), जगदम्बा (१६ मात्राएं), सवारी (१५ मात्राएं) अर्जुन (२४ मात्राएं) ब्रहा (२६ मात्राएं), विजय (२०मात्राएं), गणेश (२१ मात्राएं), भैरव (२२ मात्राएं) विष्णु (३६ मात्राएं)।

टिप्पणी- पूर्व वर्षों का पाठ्यक्रम संयुक्त रहेगा।

मंच प्रदर्शन

परीक्षार्थी को पाठ्यक्रम में निर्धारित तालों में से किसी ताल में ४५ मिनट तक तत्कार ठाट्, आमद, सलामी परन चक्रदार परन, फरमाइशी परन, तिस्त्रजाति परन, मिश्रजाति परन, परमेसू परन, शिव परन, गणेश परन, सवाली परन, जवाबी परन, कवित तथा ठुमरी आदि के साथ मंच प्रदर्शन।